पाठ 7

माँ कह एक कहानी

(प्रस्तुत कविता में यशोधरा अपने पुत्र राहुल को एक कहानी के द्वारा महात्मा बुद्ध के दया और क्षमा जैसे गुणों के बारे मंे बताती है।)

‘माँ कह एक कहानी,

राजा था या रानी,

माँ कह एक कहानी।’

‘तू है हठी मानधन मेरे,

सुन उपवन में बड़े सबेरे।

तात भ्रमण करते थे तेरे,

जहाँ सुरभि मनमानी।’

‘जहाँ सुरभि मनमानी।

हाँ! माँ यही कहानी।’

‘वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,

झलमल कर हिम बिन्दु मिले थे।

हलके झोंके हिले-मिले थे,

लहराता था पानी।’

‘लहराता था पानी।

हाँ-हाँ यही कहानी।’

‘गाते थे खग कल-कल स्वर से,

सहसा एक हंस ऊपर से।

गिरा बिद्ध होकर खर शर से,

हुई पक्ष की हानी।’

‘हुई पक्ष की हानी।

करुणा भरी कहानी।’

‘चौंक उन्होंने उसे उठाया,

नया जन्म-सा उसने पाया।

इतने में आखेटक आया,

लक्ष्य सिद्धि का मानी।’

'लक्ष्य सिद्धि का मानी|

कोमल कठिन कहानी|'

माँगा उसने आहत पक्षी,

तेरे तात किन्तु थे रक्षी|

तब उसने जो था खग भक्षी,

हठ करने की ठानी|'

'हठ करने की ठानी|

अब बढ़ चली कहानी|

हुआ विवाद सदय-निर्दय में,

उभय आग्रही थे स्व विषय में|

गयी बात तब न्यायालय में,

सुनी सभी ने जानी|'

'सुनी सभी ने जानी|

व्यापक हुई कहानी|'

'राहुल तू निर्णय ले इसका,

न्याय पक्ष लेता है किसका|

कह दे निर्भय, जय हो जिसका,

सुन लूं तेरी बानी|'

'माँ मेरी क्या बानी|

मैं सुन रहा कहानी|'

'कोई निरपराध को मारे,

तो क्या अन्य उसे न उबारे ?

रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी|'

न्याय दया का दानी|

तूने गुनी कहानी|'

मैथिलिशरण गुप्त

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 ई. में चिरगाँव, जिला झांसी में हुआ था| राष्ट्रीय धारा के हिंदी कवियों में आप को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है| उन्होंने बहुत सी पुस्तकों की रचना की है | इनमें 'जयद्रथवध', 'भारत भारती', 'सिद्धराज', 'साकेत', 'यशोधरा' और 'पंचवटी' को विशेष ख्याति मिली| इनका निधन 12 दिसम्बर 1964 ई. को हुआ|

शब्दार्थ

सुरभि = सुगंध | **तात** = पिता | **हिमबि न्दु** = बर्फ की बूँदें / ओस की बूँदें | **खग** = पक्षी | **खर** = तीक्ष्ण, तेज़ धार वाला | **शर** = बाण | **करुणा** = दया | **आखेटक** = शिकारी | **आहात** = घायल | **भक्षी** = भक्षण करने वाला , खाने वाला | **सदय** = दयालु , दयावान | **निर्दय** = जिसके अन्दर दया न हो | **उभय** = दोनों | **आग्रही** = जिद्दी, हठी | **निर्भय** = बिना भय के | **निरपराध** = जिसने अपराध न किया हो | **उबारे** = उद्धार करना | **वारे** = न्योछावर करना | **व्यापक** = विस्तृत |

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

(क) बानी, कहानी, पानी, नानी, समान तुक वाले शब्द हैं। इनकी सहायता से चार पंक्ति की एक कविता बनाइए।

(ख) इस कविता को लिखिए-कहानी के रूप में, संवादों के रूप में।

(ग) लिखे गये संवादों के आधार पर कक्षा में अभिनय कीजिए।

विचार और कल्पना

1. कहानी के अन्त में राहुल जो निर्णय देता है, क्या आप उससे सहमत हैं ? यदि आप निर्णय देते तो किसका पक्ष लेते ? क्यों ?

2. पशु-पक्षियों का शिकार करना दण्डनीय अपराध है। आपके विचार में पशु-पक्षियों के शिकार करने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?

3. राहुल की तरह आपने भी बचपन में माँ से कोई कहानी अवश्य सुनी होगी। अपनी माँ से सुनी हुई किसी कहानी को लिखिए।

कविता से

1. कहानी सुनाने के बाद माता ने राहुल से क्या प्रश्न किया ?

2. हंस को मारने वाले तथा बचाने वाले के बीच हुए विवाद का निर्णय राहुल ने क्या दिया ?

3. राहुल के उत्तर से उनके स्वभाव के विषय में क्या पता चलता है ?

4. निम्नलिखित पद्यांशों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) 'वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,

झलमल कर हिम बिन्दु मिले थे।

हलके झोंके हिले-मिले थे,

लहराता था पानी।'

(ख) 'कोई निरपराध को मारे,

तो क्या अन्य उसे न उबारे ?

रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी।'

भाषा की बात

1. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

जैसे- हठ करने वाला - हठी

रक्षा करने वाला, भक्षण करने वाला , पक्ष लेने वाला, जिसने अपराध किया हो, जिसे डर न हो।

2. समानार्थी शब्द छाँटिए -

खग - गगन, पक्षी, नभ।

आखेट - धनुष, ओखल, शिकार।

कोमल - मुलायम, कमल, कोयल।

विवाद - निनाद, समझौता, झगड़ा।

सदय - देने वाला, दया के साथ, दीनता के साथ।

3. हिले-मिले, खर-शर और सदय-निर्दय शब्द-युग्मों में एक जैसा तुक है। इसी प्रकार के तीन और समान तुक वाले शब्द-युग्म लिखिए।

किसने किससे कहा-

यथा-माँ कह एक कहानी, राजा था या रानी। बालक ने माँ से

(क) हुआ विवाद सदय निर्दय में, उभय आग्रही थे स्व विषय में,

गयी बात तब न्यायालय में, सुनी सभी ने जानी। .....

(ख) कह दे निर्भय जय हो जिसका, सुन लूँ तेरी बानी। .....

(ग) 'कोई निरपराध को मारे,तो क्या अन्य उसे न उबारे? .....

इसे भी जानें

"मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है।"

-मुंशी प्रेमचन्द